१ कला रसास्वाद – प्रयोगजीवी कला

कला का सौंदर्य समझते समय...

681QHA

उद्‌देश्य :

(१) नाट्य, संगीत तथा नृत्य इन प्रयोगजीवी कलाओं का महत्त्व स्वयं के शब्दों में बताना ।

(२) नाट्य, नृत्य तथा संगीत के मूलभूत घटकों की पहचान होना ।

(३) संगीत तथा नृत्य के अलग-अलग कला प्रकारों के नाम बताने आना तथा उस कला प्रकार का महत्त्व बताना ।

(४) अलग-अलग प्रयोगजीवी कला प्रकारों के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति करने आना ।

(५) किसी कलाविष्कार में मन को छूने वाले घटक पहचानकर उनका वर्णन करना ।

- प्रथम सत्र के कलारसास्वाद के प्रकरण में हमने दृश्य कला और प्रयोगजीवी कला में होने वाला अंतर समझ लिया है ।
- प्रयोगजीवी कलाएँ यह ऐसी कलाएँ होती हैं जिसमें सीधा दर्शकों के सामने कलाविष्कार प्रस्तुत किया जाता है ।
- प्रयोगजीवी कला में जादू के प्रयोग, गुड़िया का खेल, सर्कस, मूकनाट्य, वक्तृत्व, एकपात्री विनोदी प्रयोग आदि का समावेश होता है । लेकिन इन सबका ऊपरी तौर से नृत्य, नाटक तथा संगीत इन तीन विभागों में वर्गीकरण कर सकते हैं । अत: इन तीन कला प्रकारों को हम अधिक गहराई से समझ लेते हैं ।

नाटक :

चलो नाटक करें...

दो विद्‌यार्थियों को सामने आने के लिए कहें । उसमें से कोई एक अभिभावक बनेगा और दूसरा बेटा/बेटी बनें और एक छोटा नाटक प्रस्तुत करें । विषय ऐसा लें कि लड़का/लड़की परीक्षा में असफल हो चुके हैं । विद्‌यार्थियों को सोचने के लिए कहें । ऐसे समय दोनों में क्या घटित होता है उसे याद करके नाट्‌यरूप में प्रस्तुत करें । उसके लिए उन्हें पाँच मिनिट का समय दें ।

चर्चा करें :

- नाटक में काम करने वाले विद्‌यार्थी माता-पिता के समान बर्ताव करने का प्रयास क्यों कर रहे थे ?
- सामने नाटक में जो हो रहा है वह झूठ है यह जानते हुए भी विद्‌यार्थी नाटक देखने में दंग क्यों रह गए ?
- अगर नाटक में काम करने वाले विद्‌यार्थी अधिक-से-अधिक अभिभावक या बेटा/बेटी के समान बर्ताव करते तो क्या अन्य देखने वाले विद्‌यार्थियों को वह नाटक और अधिक पसंद आता ? कारण बताइए ।

१. नाटक याने क्या ?

पीछे देखी हुई नाटिका में माँ/पिता/लड़का/लड़की इनका काम करने वाले विद्‌यार्थी उनके जैसा बर्ताव करने का प्रयास कर रहे थे । देखने वाले विद्‌यार्थियों को मालूम था कि जो उनके सामने चल रहा है वह झूठ है फिर भी उन्होंने नाटिका को समरस होकर देखा । विद्‌यार्थियों ने जो प्रस्तुत किया उसे 'नाटक' कहते हैं ।

नाटक कला का एक ऐसा प्रकार है जिसमें कलाकार एक अस्थायी, काल्पनिक पहचान अथवा भूमिका धारण करके, दर्शकों को ज्यादातर सच लगे इस प्रकार प्रस्तुति का प्रयास करता है । संक्षेप में नाटक याने झूठ से सच का आभास निर्माण करना । इसलिए हम झूठ बर्ताव करने वाले इन्सान को 'नाटक मत कर' ऐसा कहते हैं।

२. अभिनय

कोई भी काल्पनिक भूमिका करने वाले को अभिनेता/अभिनेत्री कहा जाता है, तो वह भूमिका निभाने की क्रिया को 'अभिनय' कहा जाता है । उसके चार प्रकार माने जाते हैं ।

१. **आंगिक अभिनय :** शारीरिक हलचल, देहबोली तथा चेहरे के हाव-भावों का इस्तेमाल करके किए जाने वाले अभिनय को आंगिक अभिनय कहा जाता है ।

२. **वाचिक अभिनय :** शब्द, आवाज का चढ़ाव-उतार, दो शब्द अथवा वाक्य के बीच लिया हुए अवकाश द्‌वारा किए गए अभिनय को वाचिक अभिनय कहा जाता है ।

३. **कृत्रिम अभिनय :** अभिनय करने वाले व्यक्ति की वेशभूषा, रंगभूषा, संगीत, उसमें इस्तेमाल की गई वस्तुओं की सहायता से किए जाने वाले अभिनय को कृत्रिम अभिनय कहा जाता है ।

४. **सात्त्विक अभिनय :** नाटक के पात्र जिन भावनाओं का अनुभव करते हैं, वह जिस मन:स्थिति में होते हैं, उन भावनाओं को और मन:स्थिति को साकार करने वाले अभिनय को सात्विक अभिनय कहा जाता है । भगवान शंकर की स्तुति करने वाले निम्नांकित श्लोक में चार ही प्रकारों का उल्लेख होता है ।

आंगिकं भुवनं यस्य । **वाचिकं** सर्व वाङ्‌मयम् ।।
आहार्यं चन्द्र तारादि । तं नमु: **सात्विकं** शिवम् ।।

३. नाटक में संघर्ष का महत्त्व

कहानी – एक लड़की थी । उसे पढ़ने का बहुत शौक था । उसके माता–पिता ने उसे विद्‌यालय भेजा । वह नियमित रूप से पढ़ाई करती थी । उसे अच्छे अंक मिलते थे । इस प्रकार वह पढ़ती गई और अपने पैरों पर खड़ी हो गई ।

नाटक का मुख्य सूत्र उस के संघर्ष में होता है । संघर्ष के बिना कोई भी नाटक निर्माण ही नहीं हो सकता । किसी बात में संघर्ष उसमें होने वाले मनुष्य या घटनाएँ परिस्थिति के कारण निर्माण होता है । उपर्युक्त उदाहरण में संघर्ष निम्नलिखित पद्‌धति से निर्माण हो सकता है – उसके माता–पिता उसे विद्‌यालय भेजना नहीं चाहते हैं अथवा विद्‌यालय भेजने के लिए पैसे नहीं होते हैं अथवा किसी कारण उसे विद्‌यालय से निकाला जाता है अथवा विद्‌यालय जाते समय उसके साथ कोई दुर्घटना होती है आदि ।

पहले कहानी पढ़े, चर्चा करें

१. उन्हें कहानी मनोरंजक लगी क्या ? कहानी में क्या कमी है ? क्या इस कहानी का नाटक में रूपांतर करने से वह प्रेक्षकों को पसंद आएगी ?

२. दी हुई कहानी को मनोरंजक करने के लिए क्या कर सकते हैं ऐसा आपको लग रहा है ?

ध्यान में लेने योग्य बातें ...

- *नाटक इस कला प्रकार में आवाज, हावभाव, शरीर की हलचल यह अभिनेता/अभिनेत्री के पास होने वाला साधन है । जिसका उपयोग करके वह अपने विचार, भाव–भावना दर्शकों तक पहुँचा देता हैं ।*
- *अभिनय करते समय जोरदार, ऊँची आवाज और आवाज के चढ़ाव–उतार अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं ।*

४. ऊँची एवं सुस्पष्ट आवाज विकसित करने के लिए व्यायाम

१. सीधा बैठें, मुँह खोलकर दीर्घ श्वास लेकर आऽऽ ऐसा स्वर मुँह से निकालते हुए श्वास को बाहर निकालें । श्वास खत्म होने पर यह क्रिया पुन: करें । लगभग १० बार करें ।

२. सीधा बैठें, दीर्घ श्वास लेकर अपना मुँह बंद करके मऽऽ ऐसा स्वर मुँह से निकालते हुए नाक से श्वास बाहर निकालें । आपके गालों पर कंपन महसूस होना चाहिए । लगभग १० बार करें ।

३. एक दीर्घ श्वास लेकर मुँह से एक गुब्बारा फुलाएँ और उसका आकार देखें । हर बार गुब्बारे का आकार बढ़ाने का प्रयास करें ।

थोड़ा मजा लें ।

आवाज के चढ़ाव–उतार

निम्नांकित विधान अलग–अलग शब्द पर जोर देकर बोलकर देखें ।

''आज मैं आपसे नहीं मिल सकता/सकती''

''**मैं** आज आपसे नहीं मिल सकता/सकती'' (दूसरा कोई मिल सकता है ।)

''मैं आज **आपसे** नहीं मिल सकता/सकती'' (मैं किसी और को मिलूँगा)

''मैं **आज** आपसे नहीं मिल सकता/सकती'' (कल/परसो मिल सकते हैं)

''मैं आज आपसे **नहीं** मिल सकता/सकती'' (फोन पर बोल सकते हैं)

''मैं आज आपसे नहीं **मिल सकता**/सकती'' (आज मेरा तुमसे मिलना असंभव है)

चर्चा करें :

- क्या अलग–अलग शब्दों पर जोर देने से वाक्य का अर्थ बदलता है ?
- कुछ शब्द ऊँची आवाज में जोर देकर तथा कुछ शब्द धीरे से निचली आवाज में बोलने को आवाज का चढ़ाव–उतार कहते हैं, इसे बच्चों को समझाइए ।

५. प्रसंग के अनुसार आवाज में होने वाला बदलाव

कोई एक विद्यार्थी कक्षा के सामने आकर नीचे दिए हुए विधान अपनी प्रत्यक्ष जिंदगी में जिस पद्धति से बोलते हैं, उसी प्रकार कहें ।

देखो मुझे पुरस्कार मिल गया ।

समुद्र तट पर कितना शांत लग रहा है ।

हम खेल की कसौटी में हार गए ।

बाप रे ! बाघ आया, भागोऽऽ

मेरे साथ बात मत करो !

चर्चा करें :

- क्या हर वाक्य के अनुसार आवाज में कुछ बदलाव महसूस हुआ ?
- ध्वनि/आवाज उत्साह में कम ज्यादा हुआ है क्या ?
- किसी के साथ कोई विधान बोला जाता है क्या उसके अनुसार उसमें बदलाव आता है ?

६. प्रसंग के अनुसार देहबोली में होने वाला अंतर

किसी एक विद्यार्थी को कक्षा के सामने बुलाकर कृति करने के लिए कहें ।

१. सीधा खड़े होकर शरीर की हलचल न करते हुए आवाज के चढ़ाव-उतार तथा हाव-भाव के साथ निम्नांकित वाक्य कहें ।
   ''आग लगी है भागो ।''
   ''मुझसे झूठ मत बोलो ।''
   ''मुझे आपका मुँह भी नहीं देखना है ।''
   ''चलो हम मजा करें ।''
२. अब अभिनय और आवाज के चढ़ाव-उतार के साथ निम्नांकित बातें कहें ।
   ''आज मुझे बहुत शांत लग रहा है ।''
   ''मैं आपका दु:ख समझ सकती हूँ । भगवान आपका भला करें।''

चर्चा करें :

- बताई गई कृतियाँ आपको क्या अप्राकृतिक/कठिन लगी हैं ? कारण बताइए ।
- क्या करने से वे कृतियाँ प्राकृतिक लगेगी ?

ध्यान देने योग्य बातें :

- *भावना, देहबोली तथा आवाज का परस्पर संबंध होता है । अभिनय करते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए ।*
- *जब हम उत्तेजित होकर बोलते हैं तब हमारी आवाज प्राकृतिक रूप से बढ़ती है और आंगिक अभिनय करके बोलते हैं । जब हम दुखी अथवा उदास होते हैं तब आवाज तथा देहबोली भी शांत होती है ।*

७. नाटक की व्यक्तिरेखा (पात्र/चरित्र) :

थोड़ा सोचें -

- विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें कि कोई व्यक्ति कैसे कपड़े पहनता है, कैसे चलता है, उठना, बैठना, उसकी भाषा कैसी है । इससे हमें उस व्यक्ति के आयु, आर्थिक और सामाजिक स्थिति का अंदाजा लगता है । अगर हमें किसी विशिष्ट व्यक्ति की कोई भूमिका किसी नाटक में निभानी है तो हमें क्या करना चाहिए ?
- नाटक में काम करने वाला प्रत्येक कलाकार विशिष्ट भूमिका अदा करता है । जिस व्यक्ति की भूमिका करनी है, उस व्यक्ति की आयु, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, स्वभाव, शैली, मूल्य तथा विचार आदि बातों का विचार कर वह व्यक्ति कैसा होगा इसकी रूपरेखा बनाई जाती है । उसे 'व्यक्तिरेखा' कहा जाता है ।

- नाटक में अभिनय करते समय/नाटक लिखते समय पात्रों के अनुसार, भाषा, संवाद, पहनावा होना चाहिए इस बात का ध्यान रखें ।
- हम पात्रों का जितना गहराई से अध्ययन करेंगे उतना वह पात्र असली लगेगी और नाटक मनोरंजक हो सकता ।

थोड़ा मजा लें ।

विद्‍यार्थी आगे आकर निम्नांकित भूमिका निभाएँ । दिए हुए व्यक्ति की आवाज भाषा और देहबोली का विचार कर उनकी नकल करें । लगभग पाँच विधान कहें । (१) बूढ़ी, गरीब, किसान महिला (२) महाविद्‍यालय में पढ़ने वाला युवक (३) मध्यम आयु के डॉक्टर (४) घरेलू सामान घर-घर जाकर बेचने वाली महिला (५) लोकप्रिय अभिनेता ।

८. नाटिका की निर्मिति करना :

कोई बात अथवा प्रसंग जिसमें संघर्ष का बीज हो । ⇨ कहानी के पात्र/चरित्र उनकी भाषा, आवाज, देहबोली, पोशाक । ⇨ हर एक चरित्र निभाने वाले कलाकार के संवाद ।

किसी मनोरंजक नाटक का मंचन करने के लिए उपर्युक्त बातों का विचार करना चाहिए ।

(१) विद्‍यार्थियों के गुट बनाना ।
(२) अध्यापक हर एक गुट को एक विषय देंगे ।
(३) हरएक गुट ऐसे विषय/प्रसंग पर सोचेगा, जिसमें संघर्ष होगा । उसमें व्यक्तिरेखा निश्चित कर संवाद लिखें ।
(४) हरएक को कोई-न-कोई भूमिका निभाने का अवसर मिलेगा, इस बात का खयाल रखना ।
(५) संभव हुआ तो आपके वार्षिक स्नेहसम्मेलन में अथवा किसी कार्यक्रम में नाटक प्रस्तुत करें ।

उदाहरण के तौर पर कुछ विषय :

(१) किसी की राह देखना (उदा. किसान बारिश की राह देखता है, माँ बेटी की राह देखती है, दो लोग बस की राह देख रहे हैं ।)
(२) गलतफहमी (उदा. एक ही नाम के दो व्यक्ति होने पर, घड़ी बीच में ही बंद पड़ने पर, गलतफहमियाँ हो गईं ।)
(३) वापस आना (उदा. विदेश से भारत में, खोया हुआ लड़का वापस घर आना ।)
(४) पश्चात्ताप करना (मेहनत न करने का, उद्‍धत बात करने का, देरी होने का पश्चाताप होना ।)

ये विषय सिर्फ उदाहरण के लिए दिए हैं । अध्यापक तथा विद्‍यार्थी मिलकर कल्पना से भी विषय तय कर सकते हैं । किसी भी नाट्‍यांश का निर्माण करना, यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है । वह किसी निश्चित समय पर पूरी होने वाली नहीं है । उसके लिए पढ़ाई के अतिरिक्त समय का उपयोग करके पाठ में दी हुई संकल्पनाएँ विद्‍यार्थियों को अधिक अच्छे ढंग से समझाकर उपक्रम जारी रखना महत्त्वपूर्ण है ।

नृत्य :

हम अपने दैनंदिन के जीवन में अनेक क्रियाएँ करते हैं जैसे - चलना, किसी वस्तु की ओर निर्देश करना, किसी को बुलाना, ना कहना, दरवाजा बंद करना आदि । इन क्रियाओं में और नृत्य में की जाने वाली हलचल में क्या अंतर है ?

आपने स्नेह सम्मेलन (गैदरिंग) में अथवा टी. वी. पर अलग-अलग नृत्य प्रकार देखें होंगे । ऊपर लिखी दैनिक क्रियाएँ आपके द्‌वारा देखे हुए नृत्य प्रकार में ढालकर देखें ।

चर्चा करें :

- आपके दैनिक जीवन की हलचलें, नृत्य में की जाने वाली हलचलों के समान आकर्षक होती हैं ?
- क्या हम अपनी दैनंदिन हलचल लयबद्‌ध करते हैं ?
- क्या हम अपने दैनंदिन हलचलें लगातार क्रमबद्‌ध पद्‌धति से करते हैं ?

९. नृत्य याने क्या ?

नृत्य एक ऐसा कला प्रकार है जिसमें हेतुपूर्वक चुनी हुई सुंदर हलचलें, क्रमबद्‌ध और लयबद्‌ध पद्‌धति से कोई आशय व्यक्त करने के लिए की जाती हैं । कई बार नृत्य को संगीत का सहयोग होता है । आशय अथवा अभिव्यक्ति के अलावा नृत्य कसरत के रूप में किया जा सकता है ।

करके देखेंगे

१०. नृत्य की हलचलें :

अपने शरीर की हलचल के द्‌वारा निम्नांकित बातों को नृत्य में किस प्रकार प्रस्तुत करना है, इसका विचार आप करेंगे ? आपको जो उचित लगे वह कोई भी नृत्य प्रकार इस्तेमाल करें । जिन विद्‌यार्थियों की इच्छा है, वे कक्षा में सामने आकर नृत्य प्रकार प्रस्तुत करेंगे ।

(१) बिल्ली, साँप, शेर, मनुष्य आदि प्राणियों की हलचल ।

(२) नदी, पेड़, गाड़ी, तूफान आदि ।

(३) रुकना, लड़ना, सोचना आदि क्रियाएँ ।

११. नृत्य के हावभाव :

चेहरे के हावभाव, शारीरिक मुद्राएँ (हावभाव, कृतियाँ) और आपको सही लगे उस संगीत का प्रयोग करके एक नृत्य प्रस्तुत करना । उसके द्‌वारा निम्नांकित मानवीय भावनाएँ प्रगट हों । किसी भी नृत्य प्रकार का प्रयोग कर सकते हैं । जिन्हें इच्छा होगी वे विद्‌यार्थी कक्षा में वह नृत्य प्रकार प्रस्तुत करें ।

(१) क्रोध (२) आनंद (३) डर (४) सहानुभूति (५) द्‌वेष आदि ।

ध्यान में लेने योग्य बातें :

- *चेहरे के हावभाव और लयबद्‌ध शारीरिक हलचल यह नृत्य के प्रमुख दो अंग हैं ।*
- *इन दो प्रमुख अंगों का उपयोग कर उन्हें अपेक्षित होने वाला अर्थ नर्तक/नर्तकी दर्शकों तक पहुँचाएँ ।*

नृत्य दिग्दर्शन :

हावभाव तथा लयबद्ध शारीरिक हलचलों का एक सौंदर्यपूर्ण क्रम तय करके नृत्य को प्रत्यक्ष करना, इसे ही नृत्य दिग्दर्शन कहते हैं । वह नृत्य दर्शकों को कैसे दिखेगा और उनके मन में क्या प्रतिमा निर्माण होगी इस बारे में नृत्य दिग्दर्शन में सोचना पड़ता है । जो व्यक्ति नृत्य दिग्दर्शन करता है उसे नृत्य दिग्दर्शक कहा जाता है । संगीत, गीत के शब्द तथा भाव ध्यान में लेकर नृत्य दिग्दर्शक नृत्य रचना करता है ।

करके देखें

विद्‌यार्थियों के गुट तैयार करें । हर एक गुट अपनी रुचि के अनुसार संगीत, गीत अथवा कोई कविता चुनकर उसे लयबद्‌ध बनाकर कुछ नृत्यात्मक हलचलें निर्माण कर सकते हैं । गुट के प्रत्येक विद्‌यार्थी ने नृत्य की हलचलों का दिग्दर्शन करना चाहिए । चुने हुए गीत या संगीत पर नृत्य निर्माण होने पर वह कक्षा में प्रस्तुत करें । जब एक गुट का नृत्य चल रहा होगा तब दूसरा गुट उनका निम्नांकित मुद्‌दों के आधार पर अवलोकन करेगा ।

(१) क्या नृत्य तथा गीत के शब्दों का परस्पर संबंध महसूस हुआ ?
(२) नृत्य प्रस्तुत करने वाले विद्‌यार्थियों में कुछ तालमेल नजर आ रहा था ?
(३) नृत्य गीत के लय-ताल के अनुसार प्रस्तुत हुआ है ?
(४) क्या नृत्य की हलचलों में वही पुनरावृत्ति का भाव दिखाई दिया है ?
(५) क्या नृत्य में कुछ नवीनता दिखाई दी ?
(६) क्या नृत्य जोशपूर्ण था ?
(७) क्या नृत्य परिणामकारक था ?
(८) क्या नृत्य से सही आशय दर्शकों तक पहुँचा है ? क्या लगता है ?

भारतीय नृत्य प्रकार :

संगीत की तरह नृत्य का भी वर्गीकरण शास्त्रीय, लोकनृत्य, फिल्मी गीतों पर होने वाला नृत्य आदि किया जाता है ।

शास्त्रीय नृत्य :

भारत में नाट्‌यशास्त्र में लिखित नियमों का बारीकी से पालन करने वाले नृत्य प्रकारों को ही शास्त्रीय नृत्य का दर्जा दिया जाता है । इन नृत्य प्रकारों में अधिकतर पौराणिक कथाओं का अंतर्भाव होता था । लेकिन कालांतर से शास्त्रीय नृत्य में सामाजिक एहसासों का और उनकी अभिव्यक्ति का भी अंतर्भाव होने लगा । भारत में शास्त्रीय नृत्य के आठ प्रकार माने जाते हैं ।

भरतनाट्‌यम्‌ :

यह नृत्य प्रकार लगभग २००० वर्ष पुराना है । भरतमुनि के नाट्‌यशास्त्र में भी इस नृत्य प्रकार के संदर्भ मिलते हैं । हिंदू धर्म की कहानियाँ और तत्वज्ञान के आधार पर भरतनाट्‌यम्‌ का प्रस्तुतीकरण होता है ।

कथक :

कथा इस मूल शब्द से तैयार हुए 'कथक' शब्द का अर्थ है कहानी बताने की कला । इस नृत्य प्रकार की शुरुआत उत्तर हिंदुस्तान में हुई ।

कुचिपुड़ी :

इस नृत्य प्रकार का प्रारंभ आंध्रप्रदेश में हुआ । श्री. सिधेंद्र योगी इस वैष्णव कवि ने नृत्य प्रकार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

ओडिसी :

भुवनेश्वर के नजदीक ई. स. पू. दूसरी सदी की गुफाओं में इस नृत्य प्रकार के प्रमाण पाए जाते हैं । प्रमुखत: ओडिसी नृत्य, स्त्री नर्तक प्रस्तुत करती हैं । विविध देवताओं से संबंधित पुराणकथाएँ इस नृत्य प्रकार से स्पष्ट की जाती हैं ।

सत्रिया :

आसाम में इस नृत्य नाट्य प्रकार का प्रारंभ १५ वी सदी में हुई । उस जमाने के विद्‍वान श्रीमंत शंकरदेव को इस नृत्य प्रकार के निर्मिति का श्रेय दिया जाता है । वैष्णव मठों (सत्रों द्‍वारा) के द्‍वारा इस नृत्य प्रकार के परंपरा की परवरिश की गई इसलिए इस नृत्य प्रकार को सत्रिया कहा जाता है ।

मणिपुरी :

इस नृत्य प्रकार का प्रारंभ मणिपुर में हुआ । यह एक सामूहिक नृत्य प्रकार है । अधिकतर इसमें राधाकृष्ण की कहानियों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है ।

मोहिनीअट्टम :

भगवान विष्णु के मोहिनी अवतार से प्राप्त नाम के इस नृत्य प्रकार ने केरल में जन्म लिया । इस नृत्य प्रकार की हलचलें बहुत ही नाजुक और कोमल पद्‍धति की होती हैं । यह नृत्य प्रकार सिर्फ महिलाओं द्‍वारा प्रस्तुत किया जाता है ।

कथकली :

कथकली यह एक नृत्य-नाट्य प्रकार है (कथा + कली = प्रस्तुतीकरण) इस नृत्य के कलाकारों की वेशभूषा, चेहरे की रंगबिरंगी सजावट और मुखौटों के कारण यह नृत्य प्रकार विशेष आकर्षक लगता है । अधिकतर नृत्य प्रकार पुरुष कलाकार प्रस्तुत करते हैं । दक्षिण भारत के कलरीपायट्टू इस मार्शल आर्ट परंपरा का कथकली नृत्य प्रकार पर काफी प्रभाव दिखाई देता है ।

लोकनृत्य :

लोकसंगीत की तरह ही लोकनृत्य का अर्थ है - लोगों के द्‍वारा एकत्रित होकर किया हुआ नृत्य । यह सामूहिक नृत्य विशिष्ट समुदाय के लोग विशिष्ट प्रसंग में एकत्रित आकर करते हैं ।

भारत की विविधता के कारण लोकनृत्य की समृद्‍ध परंपरा भारत में सभी जगह दिखाई देती है । अलग-अलग प्रदेश के लोकनृत्य की शैली में काफी विविधता नजर आती है ।

हमारे यहाँ दांडिया, गरबा, भांगड़ा, लावणी, घूमर, कोळी नृत्य ऐसे काफी नृत्य प्रकार पाए जाते हैं । भारत के आदिवासी समुदाय की संस्कृति में भी पारंपरिक नृत्यों का विशेष स्थान है । महाराष्ट्र के पहाड़ी इलाके के आदिवासी लोग कद्‍दू से बनाए वाद्‍य के साथ तारपा नामक पारंपरिक नृत्य करते हैं । इस नृत्य को तारपा नृत्य कहा जाता है।

फिल्मी गीत पर मुक्त नृत्य :

भारत और विदेश के विविध नृत्य प्रकारों का मिश्रण हमें फिल्मी गीतों के नृत्य में देखने को मिलता है । फिल्मी गीतों के ये नृत्य अधिकतर मुक्त प्रवाही होते हैं ।

विविध नृत्य प्रकारों का अध्ययन :

विद्यार्थियों के गुट तैयार करना । हरएक गुट एक शास्त्रीय अथवा लोकनृत्य का प्रकार चुनकर उसके बारे में जानकारी लेकर कक्षा के सामने प्रस्तुत करें । जानकारी लेते समय निम्नांकित मुद्दों की सहायता हो सकती है ।

(१) भारत के किस राज्य में इस नृत्य प्रकार का उद्गम हुआ ?

(२) इस नृत्य प्रकार को प्रस्तुत करते समय कौन-सी वेशभूषा का प्रयोग करते हैं ?

(३) यह नृत्य किस विशिष्ट प्रसंग और ऋतु में प्रस्तुत किया जाता है ?

(४) इस नृत्य प्रकार में प्रवीण व्यक्तियों के नाम इकट्ठा करें । संभव हो तो नृत्य प्रकार की एक झलक कक्षा के सामने प्रस्तुत करें अथवा उसके मूल प्रस्तुतीकरण का वीडियो कक्षा में विद्यार्थियों को दिखाएँ ।

चर्चा करें :

- क्या टी.वी. और फिल्मों मे दिखाए जाने वाले नृत्यों पर हम विचार करते हैं ?
- जो नृत्य हम देखते हैं क्या वह सिर्फ जोशपूर्ण होते हैं या उससे आशय/अर्थ व्यक्त होने वाली अर्थपूर्ण हलचलें भी दिखाई देती हैं ?
- कुछ नृत्यों में कसरत के समान हलचलें होती हैं तो कुछ में भद्दे शारीरिक हावभाव होते हैं जो परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर नहीं देखें जा सकते हैं । क्या इस बात पर आपका ध्यान होता है ? कुछ नृत्य जोशपूर्ण तथा अर्थपूर्ण हलचलों वाले होते हैं, जिसे देखना अच्छा लगता है । उनसे आशय भी सुंदर ढंग से पहुँचाया जाता है । ऐसे कुछ फिल्मी गीतों पर किए गए नृत्य आप बता सकते हैं ?
- क्या उनका विश्लेषण, परीक्षण और वर्गीकरण कर सकोगे ? अपनी अभिरुचि की संपन्नता के लिए नृत्य की ओर इस दृष्टि से देखना क्या आपको महत्त्वपूर्ण लगता है ?

संगीत :

१. ध्वनि : अपने इर्द-गिर्द की आवाजों का निरीक्षण करें ।

अपनी कॉपी में दैनिक जीवन में सुनाई देने वाली आवाजों की सूची बनाइए । पंछियों की चहचहाहट, गाड़ी का हॉर्न, मनुष्य की आवाज, रेल की आवाज आदि ।

चर्चा करें :

- बताई गई कृति करने में आसान या कठिन लगी ? क्यों ?
- क्या सूची में दी हुई आवाजों का कर्णमधुर/कर्कश ऐसा वर्गीकरण किया जा सकता है ?

२. नाद :

कुछ आवाजें कर्णमधुर होती हैं तो कुछ कर्कश (कठोर) होती हैं । कर्णमधुर आवाज को 'नाद' कहा जाता है । एकदम से लगाए गए ब्रेक की आवाज, लागों का शोरगुल, कर्णमधुर नहीं होता है इसलिए उसे नाद नहीं कहा जा सकता । स्वयं बनाई सूची में नाद कौन-से हैं, इसे आप पहचान सकते हैं ?

३. स्वर :

स्थायी और कर्णमधुर नाद (ध्वनि) संगीतोपयोगी होता है । संगीतोपयोगी नाद को 'स्वर' कहा जाता है । **स्वरों की शृंखला को अथवा विशिष्ट रचना को सुरावट अथवा लय कहा जाता है** । लय के अनुसार स्वरों में अथवा उसी कारण आवाज में फर्क होता है ।

हम सब प्रतिदिन राष्ट्रगीत गाते हैं। राष्ट्रगीत की अंतिम पंक्ति याद करें। 'जय जय जय जय हे' यह अंतिम पंक्ति जब आप गाते हैं तब हरएक जय बोलते समय आपको कुछ फर्क महसूस होता है ? शब्द तो वही होते हैं फिर किसमें बदलाव होता है ? क्या आवाज कम अधिक होती है ?

हमने राष्ट्रगीत कितने भी बड़े स्वर में अथवा धीमे स्वर में गाया तो भी अंतिम पंक्ति का हर 'जय' अलग लगता है। स्वर संगीत का मूलभूत घटक है। यह फर्क हर 'जय' का स्वर अलग होने के कारण लगता है। स्वर संगीत की मूलभूत इकाई है। राष्ट्रगीत के अंतिम पंक्ति में हर 'जय' का स्वर पहले जय की अपेक्षा ऊपर चढ़ता जाता है।

- काँच के बर्तनों में अलग-अलग मात्रा में पानी भरें। हर बर्तन पर चम्मच से हलका आघात करें। इनसे निकलने वाले स्वर विद्‌यार्थी निम्न स्वर से लेकर ऊपरी स्वर तक क्रमानुसार सुन सकेंगे।

चर्चा करें :
अभिवावक ने भी यही वाक्य बोले तो उनके स्वर में फर्क महसूस होगा।

४. ताल :

कोई जोशपूर्ण संगीत कक्षा में लगाइए और उसके अनुसार आप तालियाँ कैसे बजाते हैं, पैर कैसे हिलाते हैं इस तरफ ध्यान दें। अब कोई शांत संगीत सुनें और पुन: निरीक्षण करें। जिस बारंबारता से आपने तालियाँ बजाईं उसे 'ताल' कहा जाता है। ठेके को ही ताल कहा जाता है। गणपति के जुलूस में बजनेवाला ढोल याद आने से 'ठेका' यह संज्ञा अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

चर्चा करें :
१. क्या तालियाँ/पैर पटकना आदि की निश्चित समय पर पुनरावृत्ति हो रही थी ?
२. क्या दोनों गीतों पर लगातार बजाई जाने वाली तालियों में फर्क था ?

५. लय :

ठेका की गति को लय कहा जाता है। कोई भी सुरावट स्वर, ताल और लय से मिलकर बनती है। निश्चित समय के बाद रात समाप्त होके दिन निकल आता है फिर दिन खतम होके रात निकलती है। उसी प्रकार निश्चित समय के बाद ऋतु बदलते हैं, उसी प्रकार प्रकृति का चक्र शुरू रहता है।

लेकिन ऋतु के आगमन जल्दी अथवा देरी से हुआ तो हम कहते हैं निसर्ग की 'लय' बिगड़ गई है। अपने हृदय की धड़कन की भी निश्चित एक गति होती है उसे हम हृदय की धड़कन की लय कहते हैं। रेल की आवाज को भी लय कहा जाता है।

थोड़ा मजा लें

लययुक्त आवाज ढूँढ़ें : अपने परिसर की ऐसी आवाज ढूँढ़ें जिनकी खुद की लय हो।

अलग-अलग लय की कोई एक रचना निर्माण करना : बच्चों के गुट तैयार करना। हर एक विशिष्ट ध्वनि निर्माण करें; उदा. कंपास बॉक्स पर पेन बजाकर निर्माण होने वाली ध्वनि, टेबल पर हाथ मारकर निर्माण होने वाली ध्वनि, चुटकी और तालियाँ बजाकर निर्माण की हुई ध्वनि। हर एक के द्‌वारा स्वयं निश्चित की हुई ध्वनि अपनी मनपसंद लय के स्वरूप में निर्माण कर, एकत्र रूप में किसी रचना का निर्माण करें।

६. संगीत याने क्या ? **गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते ।।**

उपर्युक्त श्लोक के अनुसार गायन, वादन तथा नृत्य इन कलाओं के समूह से संगीत की निर्मिति होती है । संगीत में स्वर, ताल तथा लय का समन्वय आवश्यक है । स्वर, ताल तथा लय यह संगीत के मूलभूत तत्त्व हैं ।

७. संगीत का भाव :

१. क्या कोई जोशपूर्ण संगीत सुनकर आपका मन नाचने को करता है ?
२. देशभक्ति पर गीत सुनकर आपको अभिमान महसूस होता है ?
३. क्या कोई उदास गीत सुनकर आप मायूस हो जाते हैं ?
४. क्या कोई लोरी सुनने के बाद आपको शांति महसूस होती है ?

संगीत में श्रोताओं की भाव-भावनाओं को ललकारने की विलक्षण ताकत होती है ? नाटक की तरह गाने वाला/बजाने वाला कलाकार जितनी आत्मीयता से, प्रामाणिकता से उसकी भावनाओं को श्रोताओं तक पहुँचाने का जितनी जल्दी से प्रयास करेगा; उतनी ही वे श्रोताओं के मन को छूती है । इस प्रकार का संगीत '**भावपूर्ण संगीत**' समझा जाता है ।

चर्चा करें :
१. विविध प्रकार के गीत सुनकर मन में जो भावनाएँ निर्माण होती है, वे किस प्रकार होती हैं । शब्द, स्वर अथवा लय की वजह से या सबका एकत्रित होकर म ?
२. मजे के तौर पर कुछ गीतों की लय या शब्द बदलकर देखिए । क्या महसूस होता है ?

८. वाद्य संगीत :

आपके पसंदीदा कार्टून की हलचलों के पीछे बजने वाले संगीत को याद करें । १५ अगस्त तथा २६ जनवरी को परेड करते समय बजने वाले संगीत को याद करें, उसमें स्वर होते हैं लेकिन शब्द नहीं होता है अथवा मानवीय आवाज नहीं होती है । लेकिन फिर भी उससे देशप्रेम की एक भावना जागृत होती है । संगीत में सिर्फ शब्दों के जरिए ही भावनाओं को ललकारा जाता है । जिस संगीत में कोई भी शब्द नहीं होते हैं और जो केवल एक या अनेक वाद्य बजाकर निर्माण किया जाता हैं (उदा. तबला, हार्मोनियम, सतार, संतूर, आदि) उसे 'वाद्य संगीत' कहा जाता है । पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, डॉ.एन. राजन, पं.रविशंकर , पं.शिवकुमार शर्मा, उस्ताद जाकिर हुसेन ऐसे अनेक कलाकार एकल वाद्य वादन के लिए प्रसिद्ध हैं ।

९. वाद्य के प्रकार :

अधिकतर भारत में बजाए जाने वाले कुछ वाद्यों के नाम नीचे दिए हैं ।

ताल वाद्य	तार वाद्य	सुशीर वाद्य
तबला, ढोल, डफ, पखावज, ताशा, मृदंग आदि	सितार, तंबूरा, वायलिन, सारंगी, संतूर आदि	बाँसुरी, बिगुल, तुतारी, शहनाई आदि ।

थोड़ा मजा लें

विद्यार्थियों के गुट बनाएँ । पहले दी गई सूची में से कोई एक वाद्य चुनें । उसके बारे में निम्नांकित मुद्दों के आधार पर जानकारी इकट्ठा कर प्रस्तुत करें ।

(१) वाद्य का प्रकार
(२) उसका फोटो अथवा चित्र
(३) वाद्य से ध्वनि कैसे निर्माण होती है उसके बारे में जानकारी
(४) उस वाद्य को बजाने वाले कुछ प्रसिद्ध कलाकार
(५) कोई फिल्मी गीत/लोकगीत जिसमें वह वाद्य बजाया गया है ।

१०. संगीत के बिना जीवन :

मान लीजिए अगर किसी दिन आपके जीवन से संगीत गायब हो गया तो ? विद्यालय की प्रार्थना, कक्षा में गाए जाने वाले गीत, मोबाइल के अलार्म का गीत, रिंगटोन, दरवाजे की बेल का संगीत, रेडियो अथवा टी.वी.पर प्रस्तुत होने वाला संगीत आदि सब गायब हो गया तो ? क्या-क्या परिणाम होंगे ?

११. भारतीय संगीत के प्रकार :

भारत में बहुत अधिक मात्रा में भौगोलिक, भाषिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, विविधता दिखाई देती है । यही विविधता हमें भारतीय संगीत में भी दिखाई देती है ।

नीचे भारत के कुछ संगीत प्रकारों के बारें में जानकारी दी है ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत :

शास्त्रीय संगीत में कंठ संगीत तथा वाद्य संगीत इन दोनों का समावेश होता है । शास्त्रीय संगीत में निश्चित संरचना तथा नियमों के चौखट में रहकर ही संगीत की निर्मिति करते हैं । शास्त्रीय संगीत के 'राग' तथा 'ताल' यह दो मूलभूत तत्त्व हैं । प्रत्येक राग के अपने कुछ नियम होते हैं । उसमें कुछ निश्चित स्वरों का इस्तेमाल निश्चित पद्धति से किया जाता है । प्रत्येक ताल के भी अपने नियम होते हैं । भारतीय शास्त्रीय संगीत के 'उत्तर हिंदुस्थानी संगीत' तथा 'दक्षिण हिंदुस्तानी संगीत' ऐसे दो भाग होते हैं । भारत में पंडित भीमसेन जोशी, पं.कुमार गंधर्व, गानसरस्वती किशोरीताई आमोणकर, बेगम अख्तर जैसे प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक हुए हैं । उसी प्रकार अनेक शास्त्रीय एकल वाद्यवादक भी प्रसिद्ध हैं ।

लोकसंगीत :

लोकसंगीत अर्थात लोगों का संगीत । लोकसंगीत का उद्‌गम लोगों की परंपराएँ तथा संस्कृति से होता है और वह पीढ़ी दर पीढ़ी चला आता है । भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुसार लोकसंगीत भी बदलता जाता है ।

१. जितना संभव हो सके उतने लोकसंगीत के नमूने विद्यार्थियों को सुनाने की/दिखाने की सुविधा उपलब्ध करें ।
२. किसी संगीत कार्यक्रम को विद्यार्थियों ने भेंट दी है तो उस अनुभव पर चर्चा करें ।

महाराष्ट्र का लोकप्रिय लोकसंगीत

- **पोवाड़ा :**

    पोवाड़ा एक जोशपूर्ण गीत होता है । इसका मुख्य हेतु ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करके लोगों को प्रोत्साहन देना होता है । पोवाड़ा लिखने वाले और प्रस्तुत करने वाले कलाकार को शाहीर कहा जाता है । महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य का वर्णन करने वाले पोवाड़े काफी प्रसिद्ध हैं । पोवाड़ा प्रस्तुत करते समय डफ, तंतुवाद्य (तुनतुना) और मंजीरा इन वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

- **अभंग :**

    इस गीत प्रकार में भक्तिरस की अभिव्यक्ति दिखाई देती है । उदा. संत तुकाराम द्वारा रचे विठ्ठल की स्तुति करने वाले, उसी प्रकार जीवन दर्शन बताने वाले अनेक अभंग प्रसिद्ध हैं । अभंग प्रस्तुत करते समय तबला, हार्मोनियम, मंजीरा, मृदंग इन वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

- **कीर्तन :**

    कीर्तन अर्थात कीर्ति बताना, सुनाना । किसी कल्पना का अथवा बात का वर्णन करना । कीर्तन करने वाले कलाकार को कीर्तनकार कहा जाता है । कीर्तन का हेतु अच्छी आदतें, अच्छे मूल्य, अच्छे विचार लोगों में निर्माण करना होता है । उदा. संत गाडगे महाराज के सार्वजनिक सफाई के बारे में कीर्तन । कीर्तन में हार्मोनियम, मंजीरा, तबला, मृदंग आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

- **भारूड़ :**

    यह संगीत प्रकार संत एकनाथ ने प्रसिद्ध किया । कीर्तन के जैसे ही भारूड़ में भी संगीत का उपयोग करके कहानी बताई जाती है । लेकिन भारूड़ यह समूह के साथ प्रस्तुत किया जाता है । समाज प्रबोधन यह भारूड़ का मूल उद्देश्य है ।

- **जागरण–गोंधळ :**

    देवी के लिए 'गोंधळ' किया जाता है और खंडेराय के लिए 'जागरण' करने की प्रथा है । इन दोनों प्रकार में संगीत तथा वाद्य का उपयोग किया जाता है ।

- **भजन :**

    यह किसी भी धार्मिक अथवा आध्यात्मिक गीत को दिया हुआ सर्वसाधारण नाम है । पुराण की संकल्पनाओं, साधु–संतों की शिक्षा पर सामान्यत: भजन आधारित होते हैं । उसमें भी मंजीरा, तबला, हार्मोनियम, मृदंग जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

- **लावणी :**

    यह एक पारंपरिक गायन और नृत्य प्रकार है । इसे ढोलक के ताल पर प्रस्तुत किया जाता है । जोशपूर्ण ताल यह लावणी की विशेषता है । लावणी प्रस्तुत करते समय ढोलक तथा हार्मोनियम इन वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

- **कव्वाली :**

    यह एक सूफी भक्ति संगीत का प्रकार है । कव्वाली यह सामूहिक गायन प्रकार है जिसका एक विशिष्ट ताल होता है । कव्वाली को प्रस्तुत करते समय एक विशिष्ट पद्धति से तालियाँ बजाई जाती हैं ।

- **लोकप्रिय फिल्म संगीत :**

हमें फिल्म संगीत में सभी प्रकार के संगीत की झलक दिखाई देती है । लेकिन किसी एक प्रकार को लेकर यह संगीत नहीं होता है । शास्त्रीय और लोकसंगीत से फिल्म संगीत ने अनेक बातें अपनाई हैं ।

- **नाट्य संगीत :**

महाराष्ट्र में संगीत नाटकों की बहुत बड़ी परंपरा है । पुराने जमाने में संगीत नाटक अत्यंत लोकप्रिय थे । संगीत नाटक में अभिनेता/अभिनेत्री मौखिक संवादों के साथ-साथ गायन से भी अपनी भाव-भावनाएँ तथा विचार व्यक्त करते थे । संगीत नाटक में प्रस्तुत किए जाने वाले संगीत को नाट्य संगीत कहा जाता है । नाट्य संगीत के गीत को 'पद' कहा जाता है । अनेक बार यह नाट्य संगीत शास्त्रीय संगीत पर निर्भर होता है । महाराष्ट्र में बालगंधर्व, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर, पंडित वसंतराव देशपांडे, पंडित जितेंद्र अभिषेकी, जैसे अनेक नाट्य संगीतकार प्रसिद्ध है । उसी प्रकार शिलेदार परिवार का भी नाट्य संगीत में बहुत बड़ा योगदान है ।

- **गजल :**

'गजल' इस संगीत प्रकार में शब्दों का अत्यंत महत्त्व है । शब्दों का अधिक सौंदर्य बढ़ाने की दृष्टि से तर्ज में बाँधी जाती है । गजल इस काव्य प्रकार की निश्चित रचना होती है और उसके अनुसार ही यह काव्य प्रकार लिखा जाता है । गजल के विविध विषय होते हैं । पहले गजल सिर्फ उर्दू, फारसी में रची जाती थी लेकिन आजकल गजल मराठी, हिंदी भाषाओं में भी रची जाती है ।

- **अन्य संगीत प्रकार**

फिल्मी संगीत के अलावा, फिल्म में न होने वाला परंतु कलाकारों ने स्वतंत्र दृष्टि से निर्माण किया हुआ और किसी भी विशिष्ट संगीत प्रकार में न आने वाला संगीत भी एक अलग संगीत का प्रकार माना जा सकता है ।

१२. थोड़ा ढूँढ़ें :

- आपके इलाके में कौन-सा संगीत प्रकार परंपरा से चलता आया है?
- आपके गाँव/शहर में कौन-से कलाकार लोकप्रिय हैं?
- आपके गाँव/शहर में संगीत के सार्वजनिक कार्यक्रम होते हैं क्या ? अगर संभव है तो किसी कार्यक्रम में उपस्थित रहें ।

१३. तर्ज बाँधना :

जब किसी कविता का गीत में रूपांतर करना होता है तब उस कविता की तर्ज बाँधी जाती है । तर्ज को बाँधते समय, उस कविता का आशय, शब्द रचना, कविता में उपयोग में लाई गई भाषा किस भौगोलिक भाग की है, उसके अनुसार संगीत प्रकार तय करके तर्ज बाँधी जाती है । एक बार तर्ज तैयार होने पर उस गीत के प्रस्तुतीकरण के लिए कौन-से वाद्य का उपयोग होना चाहिए इसका भी विचार होता है ।

कभी-कभी फिल्मी गीतों को बनाते समय पहले तर्ज बाँधकर फिर उस तर्ज पर शब्द/काव्य रचा जाता है । फिल्म के गीतों की तर्ज बाँधते समय उन गीतों की फिल्म में होने वाली जगह, प्रसंग, उसके पात्र, उस गीत से दर्शकों पर होने वाला परिणाम आदि बातों का विचार किया जाता है ।

१४. चलो उपायोजन करें :

विद्‌यार्थियों के गुट बनाइए । अपनी पाठ्‌यपुस्तक से अथवा किसी कविता की पुस्तक से कोई एक कविता चुने । निम्नलिखित मुद्‌दों पर कविता का विश्लेषण करें–

(१) कवि ने किन भावनाओं को शब्दबद्‌ध करने का प्रयत्न किया है ?
(२) कविता का भाव कैसा है ?
(३) अगर इस कविता का गीत में रूपांतर करना है तो उस गीत के लय की आप किस प्रकार कल्पना करेंगे ? उसकी तर्ज तेज होगी कि धीमी होगी ?
(४) इस गीत का प्रकार आपने सीखे हुए किस संगीत प्रकार जैसा होना चाहिए ?
(५) उपर्युक्त मुद्‌दों को ध्यान में लेते हुए कविता की प्रारंभिक की चार पंक्तियों के लिए क्या आप अपनी तर्ज बाँध सकते हैं ? या किसी अन्य गीत की तर्ज इस कविता के लिए योग्य है, ऐसा आपको लगता है क्या ?
(६) गीत के लिए आप किन वाद्‌यों का प्रयोग करेंगे ?
(७) संभव हो तो गीत का प्रस्तुतीकरण करें ।

मूल्यांकन

भारांश ... १०%				
मापदंड	**बहुत बढ़िया**	**सही (संतोषजनक)**	**अनुचित (असंतोषजनक)**	**अंक**
नाटक की प्रस्तुति	पात्र की आवाज और देहबोली का पर्याप्त विचार दिखाई दिया । नाटक में संघर्ष था ।	पात्र की आवाज का और देहबोली का कुछ अनुपात में विचार दिखाई दिया । परंतु नाटक में संघर्ष नहीं था।	पात्र की आवाज का और देहबोली का बिलकुल विचार नहीं दिखाई दिया । नाटक में संघर्ष भी नहीं था ।	
संगीत	संगीत की लय, सुर और भाव कविता से मिलते-जुलते थे । लय खुद बाँधी हुई थी ।	संगीत की लय, सुर और भाव, कविता के साथ मिलते-जुलते थे ।	संगीत की लय, सुर और भाव इनमें से सिर्फ एक ही बात कविता से मिलती-जुलती थी ।	
नृत्य दिग्दर्शन	नृत्य गीत के ताल के साथ मेल खाने वाला था । नृत्य की हलचल गाने के शब्दों से और संगीत के साथ मिलती-जुलती थी । नर्तक के चेहरे के हाव-भाव उचित थे ।	बाईं ओर के ३ मुद्‌दों में से २ मुद्‌दे प्रस्तुतीकरण में दिखाई दिए ।	बाईं ओर के ३ मुद्‌दों में से एक ही मुद्‌दा प्रस्तुतीकरण में था ।	

पाँचों मित्र/सहेलियाँ उनकी पसंद की जगह पर इकट्ठा हो जाते हैं । सभी धैर्यधर और धैर्यशीला को ढूँढ़ते हैं ।
लोबो ! क्या तुमने दोनों को कहीं देखा है ?
नहीं राघव, मुझे लगता है समीना ने उन्हें आखिरी बार देखा था ।
उनको जल्दी ढूँढ़ना पड़ेगा । मुझे कई बातों के लिए उनकी सहायता चाहिए ।
उसे दो दिन हो गए हैं ।
वह देखो, आकाश में !
कहाँ थे आप दोनों ?
हम वापस जा रहे थे । आपको आखरी बार मिलने के लिए आए है ।
लेकिन आप ऐसे नहीं जा सकते । हमें कौन मदद करेगा ?
अब आपको हमारी जरूरत नहीं है । आपको ही अपनी लड़ाई लड़नी होगी । अब आप खुद के बारे में विचार करने लगे हो । अब आपको बाहर की दुनिया की ओर देखने की जरूरत है । नई-नई चुनौतियाँ आपका इंतजार कर रही हैं । आपकी खोज के लिए शुभेच्छा !

संदर्भ

१. आकृती – आभा भागवत

२. वाचिक अभिनय – डॉ. श्रीराम लागू

३. कला से सिखना – जेन साही, रोशनी साही

४. शिक्षा का वाहन : कला – देवीप्रसाद

५. कलेचा इतिहास – पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

६. २१ व्या शतकातील जीवनकौशल्यांवर संशोधन व विकास, श्यामची आई फाऊंडेशन.

७. An actor prepares – Constantin Stanislavski

८. Mindset : Key Takeaways, Analysis and Review – Carol Dweck

९. Introduction to Conflict Management : Improving performance using the TKI – Kenneth Wayne Thomas

संदर्भ के लिए संकेतस्थल

1. www.safindia.org
2. http://mahacareermitra.in
3. http://ccrtindia.gov.in/
4. http://ncert.nic.in/ncert/aerc/pdfs/training_resource_materials.pdf
5. https://www.sps186.org/downloads/basic/571702/conflict_management_styles.pdf
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Environmental_enrichment
7. https://dweck.socialpsychology.org/
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Neuroplasticity
9. http://www.thebetterindia.com/53993/10-indian-folk-art-formssurvived-paintings/

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

स्व–विकास व कलारसास्वाद इयत्ता नववी (हिंदी)

₹ 64.00